

* बिरेतेज सेने केन कारु कोम तेलतद्
 गोसा तन, मैला तन सोबिन कारु ;
 कुडम् बितारेरे जी लिपिर केन
 अमः जी वो बोले गोसा जन ।
 हुड्डिडु दिने सिदम् सेने केन
 हेन्दे हरियरेज् तेल - तदुः
 चेडे चिपखवु को गोत - दुरडु
 अमः जीवो बोले आला तन ।
 सिरमा जेटे अर तेलो होयते
 पुरना पान्दु रकम् डरुडु तन ;
 आते रे हुड्डिडु मरडु सोबिन कारु
 शेवाडा हुडु लेका लेलाः तन ।

कुमुलिः - "बिरेतेज् सेने केन कारु कोम तेलतद्" दुरडु रेअः जगद को
 अपन मोने लेकाते आलेप ?

काजिरुडुः 2 "बिरेतेज् सेने केन कारु कोम तेलतद्" दुरडु 'सुडा-सोबिन'
 पुति ते आगुआकना । ने दुरडु रेन दुरडु हरिआ दो 'जे'
 दुलाय चन्द्र सुण्डा' तिनः । नका दुरडु दो 'जदुर' रज (राज)
 रे आलाकना ।

ने दुरडु रे अबु दिसुम रेअः सुनुगडा को डुनेनाः
 तना । नेरे बिद रे मेनअः कारु - सिडु, चेडे - चिपखवु
 सिंजारेः तन, सुगडा लेनेल को जी बितारेते दुरडु
 हरिआर उदुव तना चि, चिलक सबुअः बिद कोरअः
 निरल - निला - खेला को बिद कोरे तेलोगा ।

ने जादुर दुरडु रे दुरडु हरिआ उदुव तना
 चि इनिः बिद तेः सेने केना । अनादो तेल जदय
 सोबिन कारुको गोसा तना, मैला तन शेडो तना । मेका बिद
 रेअः कारु को गोसा उजडा तन तेल केदचि दुरडु हरिआ,
 जी बोले लिपिर लेका रिआ जना आदोः जी मडि ते
 गोसा हापे जना ।

अथर्व वेद दुरुद्ध हरिश्चर काजि तना । दृष्टिद्ध दिन सिद्ध
 विष्णु वेना । विस्ते इमनुद्ध विद रेक्षः दारुको इन्दे उद्धोः
 हरिश्चर गेरः तेल लेका । सोबिन सक्षः चेद्रे - विष्णुखल
 को चेरे - वेरे को गोले दुरुद्ध तन तरुकेना । मेकन विद
 रेक्षः स्यात् - वात्त सोमय रे अमःका जी रासिका
 रे आत्ता लेना ।

अथर्व वेद दुरुद्ध हरिश्चर उद्धुः तन लोद्धोः ए उद्धुख
 तना नि सिद्धा सिंगि रेक्षः जेहे उद्धोः लेलो होयो
 कोरे पुरना पान्दु सक्षम को विद दारुको उद्धु जनना ।
 ने लेक दारु कोरक्ष सोबिन सक्षम को उद्धु जन वि
 ने विद रेक्षः दृष्टिद्ध - मरद्ध सोबिन दारुको रे उद्धो
 उद्धु लेका लेलोः तना ।